बरेली, बुधवार
19 फरवरी, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4=20

दैनिक जागरण

PAGE NO II : MIDDLE

रंगकर्म की एकरूपता में भरेंगे विविध भाषाओं के रंग

- विंडरमेयर थिएटर फेस्टिवल में असमिया का संवेदनशील नाट 'रघुनाथ' का किया जाएगा मंचन
- शेक्सपियर के नाटक ओथेलो को भारतीय पारंपरिक कथाओं के दृष्टिकोण से किया जाएगा प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, बरेली : विंडरमेयर थिएटर फेस्टिवल एंड अवार्ड्स का शुभारंभ 23 फरवरी से हो जाएगा। इसमें रंगकर्म की एकरूपता में विविध भाषाओं हिंदी, हिंदुस्तानी, जर्मन, कनांटकी, फ्रांसीसी, स्पैनिश, तिब्बती, कश्मीरी, कन्नड़, मराठी, चेक भाषा के रंग भरेंगे। नाटकों के सब-टाइटल उसके संवादों के बारे में बताएंगे, लेकिन अदाकारी के रंग हृदय में उतर जाएंगे।

विंडरमेयर थिएटर फेस्टिवल में 'देशडेमोना रूपक' एक संगीत-नाटक का प्रस्तुतिकरण किया जाएगा, जो शेक्सपियर के नाटक ओथेलो को भारतीय पारंपरिक कथाओं के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। यह नाटक स्त्रीवादी दृष्टिकोण को उजागर करता है। इसमें देशडेमोना की कहानी को भारतीय महाकाव्यों की प्रमुख स्त्रियों जैसे कैकेयी, शकुंतला, रेनुका और येलम्मा की कहानियों से जोड़ा गया है। यह नाटक हिंदुस्तानी, कनांटकी और लोक संगीत की धुनों से भरपूर है। इसमें यक्षगान, हरिकथा और येलम्मानाटा जैसी पारंपरिक भारतीय कला शैलियों का प्रयोग किया गया है, जिससे यह नाटक संगीत और कहानी का अनोखा मिश्रण बन जाता है। इसकी कहानी देशडेमोना के जीवन और उसकी

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ एवं राजनीति स्मारक प्रतिमा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित एसआरएमएस रिद्धिमा में नाटक मसीह का मंचन करते कलाकार • सौजन्य रिद्धिमा

अनकही पीड़ा को दर्शाती है। यह दिखाती है कि कैसे इतिहास में स्त्रियों की आवाज को दबा दिया। यह नाटक 26 फरवरी को दोपहर 2.30 अंग्रेजी सब टाइटल्स के साथ प्ले किया जाएगा। असमिया भाषा के नाटक रघुनाथ का मंचन 25 फरवरी को शाम छह बजे प्ले किया जाएगा। इस नाटक में ग्रामीण संघर्ष और व्यवस्था की उदासीनता की मार्मिक कहानी दी गई है। साथ ही असमिया लोकसंस्कृति और शानदार अभिनय का अनूठा संगम इसमें देखने को मिलेगा। यह नाटक बदलाव और नैतिकता पर गहरे सवाल उठाता है। 'रघुनाथ' एक संवेदनशील असमिया नाटक है, जो ग्रामीण इलाकों में बुनियादी ढांचे की उपेक्षा के गहरे प्रभाव को दर्शाता है। इसे विद्युत कृष्ण नाथ ने लिखा और निर्देशित किया है। इसमें रघुनाथ नाम के ग्रामीण की कहानी है, जिसकी बेटी बाढ़ में डूबकर मर जाती है। यह त्रासदी इसलिए होती है क्योंकि उनके गांव में पुल नहीं है, जिससे उसकी बेटी सुरक्षित रूप से स्कूल जा सके। अपनी बेटी की यादों से घिरा और इस तरह की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए दृढ़ संकल्पित रघुनाथ एक अनोखी योजना बनाता है। वह अफवाह फैलाता है कि उसके पास एक प्राचीन देवता की मूर्ति है। उसका मानना है कि यह खबर सरकार, मीडिया और अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करेगी और गांव के लिए मंदिर, स्कूल और पुल जैसे बुनियादी ढांचे का निर्माण होगा। यह झूठ गांव की तकदीर को बदल पाता है या नहीं, इसका नाटकीय मंचन किया गया 'रघुनाथ' नाटक को महिंद्रा एक्सीलेंस इन थिएटर अवार्ड्स में छह पुरस्कार मिल चुके हैं। दर्शकों के लिए यह प्रभावशाली होगा।